Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

रूस की विदेश नीति (निरन्तरता और परिवर्तन)

मदन कुमार वर्मा,
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र,
उपाधि (पी.जी.) महाविद्यालय, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 5, Issue 1
Page Number : 21-24
Publication Issue :
January-February-2022
Article History
Accepted : 15 Jan 2022
Published : 30 Jan 2022

मुख्य भाव–पुराने सोवियत संघ के उत्तराधिकारी रूस ने नव उदारवाद के युग में पूर्णतः पुराने सोवियत संघ से भिन्न विदेश नीति अपनायी है, ताकि पाश्चात्य देशों व U.S.A. के सहयोग अपना त्वरित विकास कर सके एवं अपने यहाँ लोकतन्त्र व नव–उदारवाद को मजबूत कर सके अब यहाँ साम्यवाद बीते युग की बात हो गयी आज रूस का कोई अन्तर्राष्ट्रीय हित नही है।

मुख्य शब्द–शीतयुद्ध, द्विध्रुवीयता, एक ध्रुवीयता, ग्लोस्नोस्त, पेरेस्त्रोइका, राष्ट्रीय हित, विचारधारा इत्यादि।

7 नवम्बर 1917 को सोवियत संघ की स्थापना हुई। स्थापना के पश्चात् सोवियत संघ अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति हेतू कुछ निश्चित सिद्धांतों की रचना की। लेकिन अमेरिकन गुट के साथ चलती कठोर प्रतिर्स्पधा तथा गोर्बाच्योब की ग्लोस्नास्त तथा पेरेस्त्रोइका के सिद्धांतों की वजह से अन्तोगत्वा 26 दिसम्बर 1991 को सोवियत संघ का विघटन हो गया। विघटन के पश्चात् सोवियत संघ का सबसे बड़ा गणराज्य रूस उसका उत्तराधिकारी बना और उसने पूर्व सोवियत संघ के सम्पूर्ण उत्तरदायित्व का वहन करने का निश्चय किया। इस घटना से जहाँ एक ओर विश्व से शीतयुद्ध, पूंजीवाद व साम्यवाद से प्रतिर्स्पधा, शस्त्र.–र्स्पधा एवं द्व–ध्रुवीयता खत्म हुई तो वही दूसरे तरफ इसके परिणामस्वरूप विश्व एक ध्रुवीय हुआ उदारवादी विचाराधारा को साम्यवादी विचारधारा पर विजय मिलीं इस घटना के घटने पर एक अमेरिकी ने कहा कि हमने निःसंदेह ही हमने एक बड़े अजगर का मारा है किन्तु अभी–अभी कई अजगर आसपास टहल रहे है तो दूसरी तरफ मास्को विश्व विद्यालय के प्रोफेसर दमित्रि फ्योद्रोरोव ने कहा कि 'हमें भरोसा है कि अब अपने संसाधन और ऊर्जा अमरीकी खेमे से लड़ने या तीसरी दुनिया को चलाने में बर्बाद नहीं करेंगे। हमें आत्म–निरीक्षण और कड़ा परिश्रम करना चाहिए और यूरोपीय समुदाय में शामिल होना चाहिए जहां के हम है।

वैश्विक एवं राष्ट्रीय स्तर पर पूर्व सोवियत संघ का भी अन्य देशों की भांति सर्वोच्च राष्ट्रीय हित अपने देश की एकता व अखंडता की रक्षा करना था। इसके साथ अन्य गौण राष्ट्रीय हित निम्न था।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

1. साम्यवादी विचारधारा का वैश्विक स्तर पर प्रसार, नेतृत्व एवं वैश्विक स्तर पर पूँजीवादी गुट से उसकी रक्षा करना।
2. पूंजीवाद राष्ट्रों से स्वयं की रक्षा।
3. प्रकृति स्रोतो का विकास करना।
4. अमेरिका से आणविक क्षेत्र में बराबरी करना।
5. पूर्वी यूरोप की सुरक्षा व्यवस्था करना।
6. वैश्विक स्तर पर अमेरिका विरोधी अभियान का नेतृत्व करना।
7. सामरिक हितों की पूर्ति करना।
8. अंतरिक्ष में U.S.A. से प्रतिस्पर्धा करना।
9. समाजवादी अर्थव्यवस्था को बढ़ाना देना एवं वैश्विक स्तर पर उसका नेतृत्व करना।

उपरोक्त राष्ट्रीय हितों के साथ वैश्विक स्तर पर कुछ अन्य राष्ट्रीय हित उभर आये जिसमें विश्व शांति एवं शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के मार्ग पर चलकर वैश्विक स्तर पर सहयोगात्मक हित स्थापित करना शामिल है।

उपर्युक्त राष्ट्रीय हितों को प्राप्ति के लिए 1945 से पूर्व सोवियत संघ के विघटन तक निम्न सिद्धांत अपनाये गये।

1. कठोरता, उग्रता, लौह आवरण का सिद्धांत
2. शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का सिद्धांत
3. तनाव शैथिल्य की नीति का सिद्धांत
4. ब्रेझनेव सिद्धांत
5. गोर्बाच्योव का सिद्धांत

इन विभिन्न वैदेशिक सिद्धान्तों के माध्यम से पूर्व सोवियत संघ ने अपने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति का प्रयास किया अन्तिम था गोर्वाच्योज का सिद्धांत (जो 1985 में दल के महामंत्री बने) जिन्होंने ग्लोस्नोस्त (खुलापन) और पेरेस्त्रोइका (पुन निर्माण) के सिद्धांत लागू किये। प्रतिफल यह हुआ कि दिसम्बर 1991 को सोवियत संघ का अस्तित्व ही समाप्त हो गया। 26 दिसम्बर 1991 को सुप्रीम सोवियत ने अपने अधिवेशन में स्वयं के विघटित होने की घोषणा कर दी। सोवियत संघ के विघटन के बाद सुरक्षा परिषद में पुराने सोवियत संघ का स्थान रूस को दिया गया। रूस ने यह वचन दिया कि वह पुराने सोवियत संघ के सभी अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों का निर्वाह करेगा। राष्ट्रपति गोर्बाच्योव ने परमाणु बटन (ब्रीफकेस) रूस के प्रथम राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन को सौंप दिया।

26 दिसम्बर 1991 को सोवियत संघ के विघटन के बाद एक रूस एक सम्प्रभु राज्य के रूप मे सामने आया लेकिन मात्र दो दशक की विदेश नीति के आधार पर रूस की विदेशी नीति के सम्बन्ध में कुछ कहना बड़ा कठिन है तथापि रूस ही विदेश नीति के बारे में हमारे सामने दो दृष्टिकोण आते हैं।

प्रथम दृष्टिकोण यह है रूस पुराने सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राज्य है अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वह उसी की भांति विदेश नीति अपनायेगा जो पुराने सोवियत संघ की थी।

द्वितीय दृष्टिकोण यह है कि आज का रूस पुराने सोवियत संघ से एकदम भिन्न स्थिति में है वहाँ न तो कम्यूनिस्ट पार्टी की सत्ता है और न मध्य ऐशिया के गणराज्य उसके क्षेत्र का हिस्सा है रूस तो अब एक दम भू–यूरोपीय क्षेत्र का देश है अतः विदेशनीति के क्षेत्र में उसकी सोच और रूझान एक यूरोपीय महादेश की भांति होगी अतः उसकी विदेशी नति में आमूल–चूल परिवर्तन अपरिहार्य है। इस सम्बन्ध में दूसरा दृष्टिकोण ज्यादा तर्क संगत है।

साम्यवादी युग ने जहाँ पश्चिमी देश पुराने सोवियत संघ की साम्यवादी व्यवस्था को छिन्न–भिन्न करने में व्यस्त थे वहीं वर्तमान समय में वे रूस की 'लोकतन्त्र एवं मुक्त बाजार व्यवस्था' को सुदृढ़ करने के लिए आर्थिक सहायता देने की नीति का पालन कर रहे हें आज शीत युद्ध का अंत हो चुका है अतः परिवर्तित अर्न्तष्ट्रीय परिदृश्य में रूस की विदेश नीति में आमूल–चूल परिवर्तन होना स्वाभाविक है। रूस के प्रथम राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन ने 31 जनवरी 1992 को रूस की नई विदेश नीति को दिशा देते हुए तीन सिद्धान्तों की घोषणा की थीं जो निम्न है–

1. लोकतन्त्र को प्राथमिकता देना
2. मानव अधिकार व स्वतन्त्रता को प्राथमिकता देना एवं
3. उच्च विधि मापदंडों की रक्षा व सहयोग देनां

यह स्पष्ट है कि उक्त वर्णित तीनों सिद्धान्तों किसी भी रूप में पुराने सोवियत संघ के सिद्धान्तों से मेल नहीं खाते और न ही रूस के राष्ट्रीय हित पुराने सोवियत संघ के राष्ट्रीय हितों से मेल खाते है मात्र राष्ट्रीय हित सुरक्षा के सिद्धान्त को छोड़कर। आज के युग में रूस का न कोई अन्तर्राष्ट्रीय हित है न ही रूस किसी गुट या संगठन का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व कर रहा है। आज लगभग दो दशकीय रूसी विदेश नीति की निम्न विशेषताएं उभरकर सामने आयी है।

1. U.N.O. के साथ सहयोग
2. U.S.A. के साथ सामान्य सहयोगी का सम्बन्ध
3. यूरोपीय राष्ट्रों विशेषकर जर्मनी के साथ घनिष्ट आर्थिक सम्बन्ध
4. नाटों के साथ शांति के लिए साझापन
5. चीन व जापान के साथ विवादों को सुलझाने की नीति एवं
6. भारत के साथ पुनः घनिष्ट सम्बन्ध

संक्षेप में पिछले तीन दशकों में रूस ने अपनी विदेश नीति का संचालन जिस प्रकार किया है उससे उसकी विदेश नीति का रूझान स्पष्ट होता है कि आज के युग में पूर्व सोवियत संघ का उत्तराधिकारी रूस पूर्व सोवियत संघ की विदेश नीति व विचाराधारा को छोड़ चुका है उसकी विदेश नीति परिवर्तन ही परिवर्तन है

निरंतरता कुछ भी नहीं। आज रूसी विदेश नीति नव–उदारवाद से प्रेरित व प्रभावित है न कि साम्यवाद से और नव उदारवाद की प्रेरणा से आज वहां तीन नीतियों को अपनाया जा रहा है। उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अन्तराष्ट्रीय राजनीति – फाडिया बी.एल.
2. प्रमुख देशों की विदेश नीतियां – कोली सी.एम.
3. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध – सिंहल एस.सी.
4. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध – शर्मा, डा0 मथुरा लाल
5. विभिन्न पत्र–पत्रिकाएं